© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 08 | October – December 2017

ऐरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत की विवेचना

मीनू

सार : ऐरिक्सन के सिद्धांत के अनुसार पूरे जीवन भर विकास के आठ चरण क्रमानुसार चलते रहते हैं। प्रत्येक चरण में एक विशिष्ट विकासात्मक मानक होता है, जिसे पूरा करने में आने वाली समस्याओं का समाधान करना आवश्यक होता है। ऐरिक्सन के अनुसार समस्या कोई संकट नहीं होती है, बल्कि संवेदनशीलता और सामथ्र्य को बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण बिन्दु होती है। समस्या का व्यक्ति जितनी सफलता के साथ समाधान करता है उसका उतना ही अधिक विकास होता है। एरिक्सन ने मानवीय प्रकृति में तीन तत्वों को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना हैं, जो निम्न है-

- पूर्णतावाद
- पर्यावरणीयता
- परिवर्तनशीलता

एरिक्सन ने मानव प्रवृति के कुछ अन्य पक्षों जैसे कि वस्तुनिष्ठता अग्रलक्षता निर्धार्यता ज्ञेयता विषम स्थिति को अपने सिद्धान्त में अन्य पहलुओं की अपेक्षा कम महत्व प्रदान किया है। ने अपना ध्यान मूल रूप् से इस बात पर केन्द्रित किया है कि अहं का विकास किस प्रकार से होता है तथा इसके कार्य क्या-क्या है? अहं के विकास एवं कार्यों से उपाहं तथा पराहं के विकास कार्यों के संबंध न के बराबर है। वस्तुत: के सिद्धान्त की मूल मान्यता यह है कि मानव मानवीय व्यक्तित्व कई अवस्थाओं से गुजरकर विकसित होता है और ये अवस्थायें शाश्वत एवं पहले से निश्चित होती है। इतना ही नहीं विकास की ये अवस्थायें विशिष्ट नियम द्वारा संचालित एवं नियंत्रित होती है जिसे पश्चजात नियम (Epigenetic puincipte) कहते है।